तीन देवों के भी देव है-महादेव

परमपिता परमात्मा सर्व मान्य और विश्वकल्याणकारी हैं। इनका कर्म दिव्य और अलौकिक है। पूरे सृष्टि के बीज रूप हैं। इसलिए शिवरात्रि भारत के सभी त्यौहारों में महान और दिव्य है। परमात्मा शिव को त्रिलोकीनाथ, त्रिदेव, त्रिमूर्ति और परकल्याणकारी कहा गया है। प्राचीन काल में जब लोगों के अन्दर आत्मिक शक्ति थी तब वे इस रहस्य को भलीभांति जानते थे और मानते थे। परन्तु बदलते समय तथा गिरते मूल्यों के दौर में इस रहस्य का रूप बदल गया और लोग लकीर के फकीर हो गये। यही कारण है कि आज तक महादेव के रूप और कर्म की स्पष्ट व्याख्या नहीं हो पायी। परन्तु परमात्मा शिव ने पुराण तथा भगवद्गीता में अपने वास्तविक स्वरूप और अपने दिव्य कर्म को स्पष्ट किया है। परमात्मा जन्म-मरण से न्यारे और कर्मबन्धनों से मुक्त होते हुए भी पूरी सृष्टि का संचालन सुव्यस्थित और सुचारू रूप से करते हैं। इसलिए परमात्मा शिव को त्रिकालदर्शी भी कहा गया है। क्योंकि वे तीनों लोकों और तीनो कालों को जानते हैं।

तीन देवताओं की रचना की आवश्यकता: जिस तरह से किसी भी प्रबन्धन या मैनेजमेन्ट को चलाने के लिए अनेक लोगों की आवश्यकता पड़ती है। इसी तरह यह सृष्टि भी एक बहुत बड़ा प्रबन्धन और संस्थान है। सृष्टि चक्र के समयानुसार परमात्मा द्वारा स्थापित नयी दुनिया की स्थापना, पालना और जर्जर तमोप्रधान दुनिया के विनाश का कार्य सन्निहित है। इसके लिए तीन देवताओं की आवश्यकता पड़ती है। परमात्मा कल्याणकारी है। परन्तु जो परमात्मा सम्पूर्ण विश्व का मालिक है, उसका स्पष्ट स्वरूप प्रायः लुप्त हो गया है। इसके सन्दर्भ में पूरी सृष्टि के संचालनकर्त्ता परमकल्याणकारी परमात्मा शिव ने कहा कि हमारे रूप को न तो देवता, न ऋषि-मुनि और न ही मनुष्य जानते हैं। इसके सम्बन्ध में गीता में कहा गया है किः

सर्वमेतदूतं मन्ये यन्मां वदसि केशव।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः।।

अर्थात परमात्मा के स्वरूप को न तो देवता जानते हैं और न ही दानव। परमात्मा शिव का साकार शरीर नहीं है। वे सर्वशक्तिवान और सर्वगुणों एवं शक्तियों के भण्डार हैं।

प्रजापिता ब्रह्मा की रचना: जब इस सृष्टि पर काले कर्मो वाली रात होती है जिसमें मनुष्य वे सभी कर्म भूल जाते है जिससे मानव जाति तथा स्व का कल्याण हो। मानवता का दीपक बुझने लगता है, अपने-पराये की पहचान समाप्त हो जाती है ऐसे वक्त में पुनः एक सर्वगुणों युक्त मानवी मूल्यों से परिपूर्ण, एकता और वसुधैव कुटुम्बकम् वाली दुनियां की आवश्यकता पड़ती है। तब इस सृष्टि का उद्धार करने के लिए भगवान साधारण तन वाले प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश करते हैं। (शिवपुराण के नौवें अध्याय में इसका स्पष्ट वर्णन किया है।) प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा सर्व मनुष्यात्माओं को तीनों लोकों, तीनो कालों व स्वयं अपना परिचय देने के लिए इस मानवीय तन का सहारा लेते है। इसलिए इस महामानवी और साधारण तन को 'भागीरथ' और शिव की सवारी नन्दीगण भी कहा गया है। यही कारण है कि शास्त्रों में अन्य देवताओं की अपेक्षा ब्रह्मा को दाढ़ी मूंछ वाले साधारण तन के रूप में दिखाते है। उनके तीनों मुखों का अर्थ तीनों लोकों और तीनों कालों अर्थात भूत, भविष्य और वर्तमान के ज्ञान से परमात्मा अवगत कराते हैं। इसलिए उनके तीन मुख दिखाते हैं। यह रचना कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि अर्थात संगमयुग में होती है, जिसमें साधारण तन वाले ब्रह्मा की रचना करते हैं।

नवीन सृष्टि की पालना के लिए विष्णु की रचनाः कल्याणकारी परमात्मा जगन्नाथ, विश्वनाथ जब अज्ञानता की रात्रि में अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा नयी दुनियां का सृजन कर लेते है। इसके पश्चात श्रेष्ठाचारी दुनिया की पालना के लिए सोलह कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी देवी-देवताओं की पालना के लिए विष्णु की रचना करते हैं।

विनाश के लिए शंकर की रचनाः घोर कलियुग और अज्ञानता की रात्रि में गुप्त रूप में जब नयी दुनिया की स्थापना पूर्ण हो जाती है तब इस पतित, विकारी, अधर्मी, आसुरी दुनिया के विनाश की आवश्यकता पड़ती है जिसके लिए शंकर की रचना करते हैं। इसलिए कहते हैं कि जब शंकर का तीसरा नेत्र खुला तो इस सृष्टि का महाविनाश होता है। इसलिए प्रजापिता ब्रह्मा, विष्णु और शंकर की रचना इस महाभारत काल में ही होती है। इन तीन देवताओं की रचना करके परमात्मा शिव इस सृष्टि का संचालन करते हैं। इसलिए परमात्मा शिव को तीन देवताओं का भी देव कहा जाता है। यही कारण है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा शिव भोलेनाथ का ध्यान ब्रह्मा, विष्णु और शंकर तीनों करते हैं। विष्णु पुराण में इन तथ्यों का स्पष्ट उल्लेख है।

शिवरात्रि पर परमात्मा का संदेशः यह शिवरात्रि आसुरी प्रवृत्तियों का सर्वनाश तथा दैवी शक्तियों की स्थापना का दिव्य और अलौकिक समय है। आज चारों तरफ अधर्म में पूरा समाज आकण्ठ डूबा हुआ है। इसे घोर अधर्म वाली दुनिया नहीं तो और क्या कहेंगे। वर्तमान समय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना कर परमात्मा शिव जन-जन में व्याप्त अज्ञानता को दूर कर नयी दैवी गुणों वाली दुनियां की स्थापना के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर नयी दुनिया की स्थापना का महान कार्य कर रहें हैं। यह समय अज्ञानता में सोने का नहीं बल्कि जागरण का है।

परमात्मा शिव का यह संदेश है कि मनुष्यात्माओं, अज्ञानता की नींद से उठो और स्वयं को तथा अपने परमपिता परमात्मा को पहचान ईश्वरीय शक्तियों से अपने अन्दर की बुराइयों को समाप्त कर दैवी गुणों का संचार करो। आज चारो ओर आसुरी शक्तियों का बोलबाला है। यह अन्त समय की निशानी है और इसी वक्त में परमात्मा को पहचान लेना ही हमारी बुद्धिमत्ता है। वर्तमान समय महाविनाश के लिए विज्ञान के अस्त्र-शस्त्र, प्रकृति और मानव तीनों प्रतीक्षा कर रहे हैं। समयानुसार महाविनाश तो होगा ही इसलिए समय रहते स्वयं को परिवर्तन कर स्वर्णिम दुनियां के अधिकारी बनो, यही परमात्मा शिव का आदेश और संदेश है। अन्यथा महाविनाश के समय पश्चाताप के अलावा कुछ नहीं बचेगा।